Institute of Management Studies, DAVV

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर
धियो यो नः प्रचोदयात्

Personal Enrichment Task Force and MBA FT invite Parents and Teachers

Date - 1 November 2018

Venue - IMS Auditorium

Timings - 11:00 a.m. onwards

Student led conference on Learning Management from Indian Scriptures

शास्त्रों से प्रबंधन के गुर सीख कहा- बिज़नेस की भी लक्ष्मण रेखा है, पार की तो नुकसान तय

भारतीय शास्त्रों-ग्रंथों से मैनेजमेंट लर्निंग्स सीख शेअर की आईएमएस स्टूडेंट्स ने

सिटी रिपोर्टर | इंदौर

वन में स्वर्ण मृग पकड़ने के दौरान जब लक्ष्मण ने भ्राता राम की आवाज में अपने नाम की पुकार सुनी तो उन्होंने जाने से पहले कुटिया के बाहर लक्ष्मण रेखा खींची। सीता से कहा इसे पार न करें। लेकिन साधु के वेश में आए रावण को भिक्षा देने के लिए वो रेखा लांघ गईं और रावण ने उनका हरण कर लिया। आज के दौर में ये प्रसंग सिखाता है कि नियमों के परे गए तो नुकसान तय है। और कॉर्पोरेट्स के लिए ये बहुत बड़ी सीख है।

सदियों पहले लिखे गए रामायण, महाभारत, भगवद् गीता और गुरु ग्रंथ साहेब जैसे शास्त्रों में उल्लेखित नीतियां, घटनाएं, दर्शन आज भी प्रासंगिक हैं इसकी तर्कसम्मत जानकारी डीएवीवी के इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज के स्टूडेंट्स को स्टूडेंट्स ने ही दी। गुरुवार को हुए इस कार्यक्रम में स्टूडेंट्स के 24 ग्रुप्स ने ऐसे पौराणिक प्रसंगों के माध्यम से मैनेजमेंट की लर्निंग्स दी।

भरत मिलाप प्रसंग

भगवान राम के चित्रकूट में होने की जानकारी भरत को लगी तो वे वहां जाकर राम से लौट चलने को कहते हैं। राम पिता को दिए वचन का मान रख साथ जाने से इंकार कर देते हैं।

सीख : काम, जिम्मेदारी और वादों के प्रति कमिटेड रहिए। नारायण मूर्ति 2011 में इन्फोसिस से रिटायर हुए। उनके जाते ही कंपनी घाटे में जाने लगी। 2013 में बतौर एक्ज़ीक्यूटिव चेयरमैन दोबारा ज़िम्मेदारी ली और कंपनी को उन्हीं ऊंचाइयों पर ले गए।

राम सेतु निर्माण प्रसंग

सेतु निर्माण के दौरान भगवान राम की सेना में शामिल हरेक प्राणी ने अपनी योग्यता के अनुसार काम किया और पानी पर पत्थरों से सेतु बनाने के कारनामे को अंजाम दिया।

सीख : मिलकर काम करने से सफलता जल्दी मिलती है। फायज़र कंपनी भी एक समय बंद होने को थी लेकिन की हॉग ने कर्मचारियों के साथ मिल काम किया और कंपनी को दोबारा उसी पोजीशन में ले आईं।

ये चार यज्ञ भी हमें सहज ही बहुत कुछ सिखाते हैं

ब्रह्मयज्ञ : ईश्वर का ध्यान करना ही ब्रह्मयज्ञ है। इसे सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी से जोड़ते हुए स्टूडेंट्स ने बताया हम भगवान की पूजा इसलिए करते हैं क्योंकि उन्होंने मनुष्यों को बनाया है। बिज़नेस बनाने वाली सोसायटी होती है। वो किसी भी बिज़नेस को बड़ा या छोटा कर सकती है। हर कॉर्पोरेट को सीएसआर के ज़रिए सोसायटी और पर्यावरण का ऋण चुकाना चाहिए।

पितृयज्ञ : जीवित माता-पिता, गुरुजन व बड़ों की सेवा और आज्ञापालन पितृयज्ञ है। इस तरह कंपनी के पिता उसके ओनर होते हैं। जब भी कंपनी का प्रॉफिट होता है तो उसका पहला शेयर ओनर्स को मिलना चाहिए। कंपनी की रेपुटेशन बढ़ेगी तो सबका मान बढ़ेगा।

अतिथियज्ञ : घर आए अतिथि, विद्वान, धर्मात्मा, संत-महात्माओं का सत्कार कर उनसे ज्ञान प्राप्त करना अतिथियज्ञ है। कॉर्पोरेट वर्ल्ड में इंटर्न्स अतिथि की तरह हैं। उन्हें यथोचित सम्मान और सैलरी दी जानी चाहिए क्योंकि वे कंपनी को आगे बढ़ाने के लिए काम करते हैं। उनका ऋण चुकाना चाहिए।

बलिवैश्वदेव यज्ञ : पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि ईश्वर ने हमारे कल्याण के लिए ही बनाए हैं। इन पर दया करना और इन्हें खाना खिलाना बलिवैश्वदेवयज्ञ है। ये सस्टेनेबल डेवलपमेंट की सीख देता है ताकि किसी जीव को नुकसान न पहुंचे।

आइएमएस में महाभारत, रामायण, गुरुग्रंथ साहिब के जरिए स्टूडेंट्स ने पैरेंट्स के सामने दिया प्रजेंटेशन

हमारे शास्त्र किसी हॉर्वर्ड, कैम्ब्रिज से कम नहीं, मैनेजमेंट के बेस्ट फंडे हैं इनमें

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

इंदौर ◆ भीष्म पितामह महाभारत के मुख्य किरदारों में से एक थे, इसके बावजूद उन्हें आज कोई याद नहीं करता। वे अपनी रूढ़ीवादी सोच पर ही अडिग रहे। खुद को बदलने की कोशिश नहीं की। ऐसा ही कुछ मोबाइल कंपनी नोकिया के साथ भी हुआ। दुनिया बदलती गई, सैमसंग, माइक्रोमैक्स फिर आइफोन और एंड्रॉयड स्मार्टफोन आए, नोकिया अपने पुराने कलेवर पर ही अटका रहा। लोगों की पसंद बदली, लेकिन कंपनी ने अपने आप को नहीं बदला। इसका खामियाजा यह रहा कि नोकिया अब लोगों के हाथों से गायब हो गया। इससे ये सीखने को मिलता है कि समय के साथ बदलेंगे, तभी मार्केट में बने रहेंगे।

यह विचार डीएवीवी की इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज में हुए भारतीय शास्त्रों से मैनेजमेंट के गुर विषय पर हुई कॉन्फ्रेंस में स्टूडेंट्स ने रखे। कॉन्फ्रेंस की खास बात यह रही कि स्टूडेंट्स के प्रजेंटेशन सुनने के लिए पैरेंट्स भी आइएमएस ऑडिटोरियम में मौजूद थे। कंपनी में छोटे से छोटे कर्मचारियों को प्रेरित करने की जरूरत को रामसेतु निर्माण में गिलहरी के योगदान के जरिये समझाया। आइएमएस डायरेक्टर डॉ. संगीता जैन भी मौजूद थीं। प्रोफेसर डॉ. यामिनी करमारकर ने बताया कि जब भी मैनेजमेंट की बात होती है तो हम वेस्टर्न मॉडल व थिंकर की ही बात करते हैं, लेकिन हमारे भारतीय शास्त्र आज भी प्रासंगिक हैं, इसलिए स्टूडेंट्स को हमारे ग्रंथों से लर्निंग उठाने और वर्तमान परिदृश्य के हिसाब से प्रासंगिकता साबित करने के लिए मोटिवेट किया।

स्टूडेंट्स को मिली तीन सीख

टीम वर्क : पहली बार कॉलेज में कोई कॉन्फ्रेंस पूरी तरह से स्टूडेंट्स लेड थी। उन्होंने खुद ही टीम बनाई, रिसर्च किया और टॉपिक चयन कर इसे अंजाम पर पहुंचाया। टीम वर्क सीखने को मिला।

थीम : किसी भी इवेंट को सक्सेस बनाने के लिए एक थीम जरूरी होती है, इसलिए स्टूडेंट्स की टीम ने लर्निंग मैनेजमेंट फ्रॉम इंडियन स्क्रिप्चर्स टॉपिक का चयन कर क्रियान्वित किया। यह उन्हें मुश्किल समय में एक मार्ग दिखाएगा।

इमोशनल अटैचमेंट : युवा पीढ़ी पैरेंट्स को सोशल व प्रोफेशनल लाइफ में इन्वॉल्व करना पसंद नहीं करती, लेकिन यहां पैरेंट्स के सामने स्टूडेंट्स ने परफॉर्म किया। इमोशनल कनेक्शन हुआ।

स्टूडेंट्स ने ग्रंथों से ऐसे किया रिलेट

रामायण : एमबीए एफटीए स्टूडेंट श्रेया ने रामायण और कॉरपोरेट वर्ल्ड पर कहा, भगवान राम की प्रतिबद्धता सबसे बड़ा सक्सेस मंत्रा है। अपने वचन के कारण राज-पाट छोड़ 14 साल का वनवास लिया। इंफोसिस फाउंडर नारायण मूर्ति कमिटमेंट के कारण ही रिटायरमेंट के बाद भी दोबारा कंपनी में लौटे। हम कभी मां सीता की तरह नैतिक दुविधा में फंस जाते हैं। सीता लक्ष्मण रेखा पार करने से पहले सोच रही थी, अगर पार की तो लक्ष्मण नाराज हो जाएंगे और नहीं की तो साधु का शाप हानि पहुंचाएगा।

पंचमहायज्ञ : ब्रह्म यज्ञ, तर्पण पितृ यज्ञ, हवन देव यज्ञ, पंचबलि भूत यज्ञ और अतिथियों का पूजन-सत्कार अतिथि यज्ञ हमारे ग्रंथों में पंच महायज्ञ के रूप में स्थापित हैं। इन्हीं पंच महायज्ञों के आधार पर व्यापार की सामाजिक जिम्मेदारी समझाई है। एमबीए एफटी फर्स्ट इयर के छात्र पुष्पेंद्र ने कहा कि हर बिजनेस की समाज, अपने लोगों, देश, पशु-पक्षी, प्रकृति के लिए नैतिक जिम्मेदारी होती है। इन्हें ध्यान में रखकर कोई भी काम किया जाए तो असफलता नहीं मिलेगी।

गुरु पर्व : एमबीए एफटी फर्स्ट इयर स्टूडेंट हर्षदीपसिंह गुर ने गुरु पर्व के जरिये मैनेजमेंट के बेसिक फंडे समझाए। उन्होंने कहा कि हम सबसे पहले फोरकास्टिंग करते हैं कि पर्व में कितने लोगों के आने की संभावना है। इसी आधार पर प्लानिंग होती है। फिर इसी संख्या के आधार पर लंगर का प्रसाद बनता है। यह ऑर्गनाइज तरीके से होता है। बिना ब्रेक अखंड पाठ होता है। इसके लिए भी प्लानिंग होती है। इसी तरह बिजनेस में भी हर चीज फोरकास्टिंग, प्लानिंग और ऑर्गनाइज तरीके से हो तो सक्सेस मिलती है।

पांडवों जैसी सही स्ट्रेटेजी अपनाकर ही जियो कम कस्टमर बेस के बाद भी सफल हुआ

इंदौर। नईदुनिया रिपोर्टर

डीएवीवी में लर्निंग मैनेजमेंट फ्रॉम इंडियन स्कल्पचर्स विषय पर सम्मेलन

मैनेजमेंट की पढ़ाई के लिए हम हजारों किताबें पढ़ते हैं। विदेशों में पढ़ने जाते हैं जबकि मैनेजमेंट के सबसे अच्छे सिद्धांत हम अपने शास्त्रों, ग्रंथों, पुराणों से ही सीख सकते हैं। देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के आईएमएस विभाग में गुरुवार को स्टूडेंट्स ने ऐसे ही कई सिद्धांत हमारे सामने प्रस्तुत किए जो आज भी प्रासंगिक हैं। यहीं से हम टीम भावना, समन्वय, मेलजोल सब कुछ सीख सकते हैं।

कई बार हमें नैतिक द्वंद्व की स्थितियों का सामना करना पड़ता है। रामायण में भी इसी वजह से सीता ने लक्ष्मण रेखा पार की और रावण द्वारा अपहरण कर लिया गया। कॉरपोरेट जगत में भी अगर आप कंपनी की नीतियों के विरुद्ध जाते हैं तो उसके दुष्परिणाम भुगतना पड़ते हैं। इसी तरह के कई प्रासंगिक उदाहरण 24 टीमों ने प्रस्तुत किए। हर टीम में 5 सदस्य थे और सभी को 3 से 5 मिनट का समय दिया गया था। स्टूडेंट्स पिछले एक महीने से इसकी तैयारी कर रहे थे। इसके लिए उन्होंने रामायण, महाभारत के अलावा भगवद्गीता, विष्णु पुराण, कुरान, चाणक्य नीति, मनुस्मृति का विस्तार से अध्ययन किया था।

श्रीकृष्ण जैसा कूटनीतिक मैनेजर कोई नहीं हो सकता। उनकी मैनेजमेंट स्किल्स कमाल की थीं। दुश्मनों का किस तरह से मुकाबला करना है वो सीखना चाहिए। पल्लवी जैन और टीम ने बताया कि पांडवों के पास सेना कम थी, लेकिन सही रणनीति की वजह से उन्होंने कौरवों पर जीत दर्ज की। जिस तरह जियो कंपनी ने सही रणनीति के तहत कम कस्टमर बेस होने के बाद भी टेलिकॉम की दूसरी कंपनियों को काफी पीछे छोड़ दिया।

हितोपदेश से मित्रलाभ को समझाने के लिए उन्होंने ईमामी कंपनी की सफलता का जिक्र किया। इस कार्यक्रम में ऑडियंस के रूप में स्टूडेंट्स के पेरेंट्स आए थे। विभाग की निदेशक संगीता जैन ने कहा अक्सर पेरेंट्स को यह जानकारी नहीं रहती कि बच्चे कॉलेज में क्या सीख रहे हैं। बच्चे को सही रास्ता दिखाने और सक्षम व्यक्ति बनाने में पेरेंट्स और संस्थान दोनों की भूमिका महत्वपूर्ण है। इस दौरान करिकुलम को बेहतर बनाने के लिए भी पेरेंट्स की प्रतिक्रिया जानी गई।